Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

अध्यापक की कुशलता का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर प्रभाव

Dr. Subhader Pal*

Lecturer, Education Department in Haryana

सार – ***बच्चों में जीवन जीने के सलीके में बहुत बदलाव आ गया है। आज का नागरिक अपना जीवन अपने अंदाज में व्यतीत करना चाहता है। इसमें किसी का हस्तक्षेप करना उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। इस जीवन जीने की कला में वह अपनी जिम्मेदारियों से बचने का भी प्रयास कर रहा है। इसका प्रतिकूल प्रभाव परिवार और समाज पर पड़ रहा है। हमें विशेषकर अभिभावकों ओर शिक्षकों का मार्गदर्शन बच्चों के जीवन जीने की शैली को बहुत हद तक प्रभावित करता है। हमें उनकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाते हुए परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उनके दायित्वों के प्रति भी जागरूक करना होगा। ऐसा नहीं करते हैं तो युवा पीढ़ी अपने जीवन और उनके दायित्वों के बारे में जिम्मेदार नहीं हो पाएंगे।***

----------X----------

प्रस्तावना

संस्कारों का रहता है असर: आज के विद्यार्थियों के जीवन की शैली में जो परिवर्तन आया है वह सबसे अधिक संस्कारों का है। आज का विद्यार्थी मेधावी, इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी में बहुत अधिक रुचि रखता है लेकिन सुसंस्कारित नहीं है। अच्छे संस्कारों की कमी के कारण उठना, बैठना, बोलना, बड़ों का आदर सत्कार, माता-पिता, गुरुजनों के सम्मान में रुचि नहीं रखता। इन सबका कारण माता-पिता के समय अभाव एवं संयुक्त परिवार का कम होना है। प्रत्येक माता पिता यह उम्मीद करते है कि उनका बच्चा बेहतर शिक्षा ग्रहण करे, अच्छे संस्कार स्कूल में शिक्षक भी सिखाएं। विषय ज्ञान के लिए विद्यार्थी उत्तरदायित्व हैं लेकिन संस्कारों, वास्तविक प्रयोगशाला तो घर एवं परिवार हैं जहां बच्चों के व्यवहार एवं संस्कारों का वास्तविक प्रयोग होता है। आज का शिक्षक एवं छात्र दोनों अंकों के खेल में व्यस्त हो गए हैं। उनका एक ही लक्ष्य सर्वाधिक अंक लाकर कुछ बनने का होता है। अध्यापक भी छात्रों के सर्वांगीण विकास के स्थान पर मानसिक विकास पर केंद्रीत होता है। इस भागदौड़ में जीवन के अच्छा नागरिक या अच्छा इंसान बनाने की पहलू अछूते रह जाते हैं। हमारे समय में शिक्षक एक ईश्वर की तरह वास्तविक रूप से पूज्यनीय होते थे। आज इस स्तर में बहुत बदलाव आया हुआ है। इसके लिए हम सभी समाज के लोग जिम्मेदार हैं। आज अभिभावक शिक्षक पर अपने बच्चों से ज्यादा भरोसा नहीं करता पहले शिक्षक की बात पर विश्वास किया जाता था। पहले माता पिता अपने से ज्यादा शिक्षक को बच्चों का शुभचितक मानते थे।

भूमिका

अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। अध्यापक के बिना शिक्षा की प्रक्रिया सफल रुप से नहीं चल सकती।अध्यापक न केवल छात्रों को शिक्षा प्रदान करके ही अपने दायित्वत से मुक्ति पा लेता है वरन उसका उत्तर दायित्व है तो इतना अधिक और महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें पूर्ण करने में समर्थ नहीं है। शिक्षक की क्रिया और व्यवहार का प्रभाव उसके विद्यार्थियों,विद्यालय और समाज पर पड़ता है।इस दृष्टि से कहा जाता है कि अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है।अतः अध्यापक अपने कार्यों को सफलतापूर्वक एवं उचित प्रकार से करने के लिए आवश्यक है कि उसमें कुछ गुण अथवा विशेषताएं होनी चाहिए। सामान्यतः एक अच्छे अध्यापक में निम्नलिखित गुणों का होना अति आवश्यक है-

शिक्षक में मुख्य रुप से 4 गुण होने जरुरी है

1. शैक्षिक गुण/ योग्यताएं
2. व्यावसायिक गुण

www.ignited.in

3. व्यक्तित्व संबंधी गुण और

4. संबंध स्थापित करने का गुण

1. शैक्षिक योग्यता -

एक अध्यापक में अध्ययन के लिए स्तरअनुसार न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का होना अनिवार्य है। साथ ही अध्यापक का प्रशिक्षित होना भी आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर-

प्राइमरी कक्षाओं को पढ़ाने के लिए अध्यापक को कम से कम हायर सेकेंडरी कक्षा पास होना तथा एस.टी.सी. के रूप में शिक्षण कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया हुआ होना चाहिए।

इसी प्रकार सेकण्डरी कक्षाओ को पढ़ाने वाले अध्यापक के लिए कम से कम शैक्षिक योग्यता के रूप में स्नातक एवं B.Ed किया हुआ होना चाहिए।

उच्च माध्यमिक कक्षा को पढ़ाने वाला अध्यापक संबंधित विषयों में स्नातकोत्तर की डिग्री लिया हुआ होना चाहिए।साथ ही B.Ed की डिग्री भी उसके पास होना आवश्यक है।

कई विद्यालयों में अप्रशिक्षित अध्यापक या अध्यापिकाओ को रख लिया जाता है जो उचित नहीं है।अतः अध्यापक का चयन करते समय इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि उसमें न्यूनतम योगिता हो तथा प्रशिक्षित हो।

2. व्यावसायिक गुण--

एक अच्छा अध्यापक बनने के लिए आपमें व्यवसायिक गुणों का होना भी आवश्यक है-

1. व्यवसाय के प्रति रुचि निष्ठा

एक अध्यापक को अध्यापन व्यवसाय में रुचि ओर उसके प्रति निष्ठा होनी चाहिए।वह उसे केवल अपनी कमाई का साधन ही ना समझे ।अध्यापक यदि मजबूरी में अध्यापक बनता है तो वास्तव में वह अध्यापक बनने के योग्य नहीं है।

2. विषय का पूर्ण ज्ञान

एक कुशल अध्यापक में इस गुण का होना अति आवश्यक है।अध्यापक को विषय का पूर्ण ज्ञान नहीं होगा तो वह विद्यार्थियों की विषय संबंधी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाएगा जिससे छात्र उसका आदर सम्मान नहीं करेंगे और न ही उसे आत्म संतुष्टि हो पाएगी।

3. शिक्षण विधियों का प्रयोग

एक अच्छा अध्यापक में यह गुण होना भी आवश्यक है कि छात्र उसकी बात को अच्छी तरह से समझ सके इसके लिए उसे छात्रों के स्तर अनुसार एवं विषय की प्रकृति अनुसार उचित शिक्षण विधि का प्रयोग करना चाहिए। जैसे छोटे बालको के लिए खेल विधि,प्रदर्शन विधि और कहानी विधि का प्रयोग प्रभावशाली रहता है तथा उच्च कक्षाओं में व्याख्यान प्रयोगशाला प्रयोगात्मक विधि उपयुक्त रहती है।

4. सहायक सामग्री का प्रयोग-

वर्तमान समय में विषय वस्तु की जटिलता कि समाप्ति की दृष्टि से अध्यापन में शिक्षा तकनीकी के साधनों का प्रयोग किया जा लगा है एक अच्छा अध्यापक वही है जो छात्रों के स्तर, उनकी योग्यता एवं क्षमता तथा विषय-वस्तु की प्रकृति को ध्यान में रखकर वस्तु को सरल और रुचिकर बनाने की दृष्टि से समुचित शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करें।

5. मनोविज्ञान का ज्ञान-

एक कक्षा में अलग-अलग प्रकार के बालक होते हैं उनकी भिन्न समस्या होती है वह अधिगम भली-भाति कर सके इसके लिए उनकी समस्याओं का समाधान होना आवश्यक है।एक शिक्षक उसी स्थिति में बालको की समस्याओं का समाधान कर सकता है जब वह उन से परिचित हो और समस्याओं के संबंध में जानने के लिए शिक्षक को मनोविज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है।

मनोविज्ञान का ध्यान होने पर ही शिक्षक बालक की रूचि योगिता क्षमता बुद्धि आदि को समझ सकता है और उसके आधार पर अपना जो शिक्षण है उस और निर्देशन का कार्य सफलतापूर्वक कर सकता है।

6. ज्ञान पिपासा -

एक अच्छा शिक्षक वही है जिसमें हमेशा सीखने की ललक बनी रहती है दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि' एक अच्छा अध्यापक वही है जो हमेशा विद्यार्थी बना रहता है 'इससे अध्यापक का खुद का ज्ञान तो बढ़ता ही है साथ ही वह अपने विद्यार्थियों को भी लाभ दे सकता है।

7. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रूचि -

एक अच्छे अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह विद्यालय में विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन

www.ignited.in

करने एवं उन्हें सफलतापूर्वक संपन्न कराने में रूचि ले।साथ ही इसके लिए उसे अपने विद्यार्थियों में रुचि विकसित करने के लिए प्रयत्न करने चाहिए।

8. समय का पाबंद -

अच्छे अध्यापक का एक महत्वपूर्ण गुण उसका समय के प्रति पाबंद होना है।वह समय पर विद्यालय में जाएं,प्रार्थना सभा में उपस्थित हो तथा कालांश प्रारंभ होते ही कक्षा में जाएं और कालांश समाप्ति के पूर्व क्लास छोड़े अध्यापक यदि समय का पाबंद नहीं है तो उसके विद्यार्थी भी समय के पाबंद नहीं हो सकते।

9. कुशल वक्ता -

एक शिक्षक को अपनी बात को छात्रों तक पहुंचाने के लिए उसे रुचिपूर्ण,अच्छे स्तर तथा निश्चित अर्थ वाले शब्द का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही प्रवाह पूर्ण तरीके से बोलने में उसे झिझकना नहीं चाहिए।अत्यधिक गति से भी नहीं बोलना चाहिए। दूसरे शब्दों में उसे अपनी बात इस प्रकार के रखनी चाहिए कि विद्यार्थियों पर उसका प्रभाव पड़े और वे उसे सुनने में रुचि ले।

10. छात्रों के प्रति प्रेम व सहानुभूति -

एक शिक्षक केवल अध्यापक के प्रति रुचि रखें यह पर्याप्त नहीं है।उसे अपने विद्यार्थियों में भी रुचि रखनी चाहिए।साथ ही विद्यार्थियों से प्रेम, सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। विद्यार्थियों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का संतोषजनक रूप से उत्तर देना चाहिए।उनकी समस्याओं का सहानुभूतिपूर्ण समाधान करना चाहिए।इससे विद्यार्थी भी अध्यापक आदर करेंगे।

3. व्यक्तित्व संबंधी गुण -

एक अच्छे टीचर की पर्सनैलिटी भी प्रभावशाली होना आवश्यक है टीचर का व्यक्तित्व प्रभावशाली तब ही हो सकता है जब उसमें निम्न गुण हो-

1. वेशभूषा -

टीचर का व्यक्तित्व प्रभावशाली होने के लिए उसका बाहरी स्वरूप अध्यापक के सम्मान ही होना आवश्यक है।अध्यापक के समान बाहरी सवरूप होने का अर्थ उसके सुंदर या असुंदर होने से न होकर उस की वेशभूषा आदि से है।अध्यापक को साफ सुथरी प्रेस किये हुए तथा उचित कपड़े पहने चाहिए। बालों को ढंग से सँवारकर कक्षा में जाना चाहिए। इससे शिक्षार्थी के ऊपर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

2. अच्छा स्वास्थ्य -

एक अच्छे अध्यापक का शारीरिक रूप से स्वस्थ होना भी आवश्यक है।यदि शिक्षक स्वस्थ नहीं होगा तो वह कक्षा में क्या पढ़ाएगा वह किस रूप से पढायेगा। शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने पर मानसिक रुप से भी अस्वस्थ रहेगा और साइकोलॉजिस्ट के द्वारा कहा गया है कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है" शिक्षक का शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है।

3. उच्च गुणवत्ता-

एक शिक्षक को चारित्रिक रुप से दृढ़ होना चाहिए।क्योंकि शिक्षक के चरित्र का प्रभाव उसके विद्यार्थियों पर शीघ्र ही पड़ता है। अतः अध्यापक को अपने विद्यार्थियों के समक्ष अपने आपको अच्छे रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। कभी भी उनके सामने कोई गलत या अनैतिक हरकत नहीं करनी चाहिए।

4. नेतृत्व शक्ति-

एक अच्छे शिक्षक में नेतृत्व शक्ति भी होनी चाहिए।उसे अपने विद्यार्थियों को प्रत्येक क्षेत्र, शिक्षक अधिगम, पाठ्य सहगामी प्रक्रिया, किसी विषय में विचार-विमर्श अनुशासन बनाए रखने आदि में कुशल एवं प्रभावशाली नेतृत्व प्रदान करना चाहिए।जिससे विद्यार्थी इन सभी क्षेत्रों में सफलता पूर्वक कार्य कर सकें।

5. धैर्यवान -

एक अच्छे शिक्षक में धैर्य का गुण होना आवश्यक है।छात्रों के प्रश्न पूछने पर उसे उखड़ना नहीं चाहिए। बात-बात में झुंझलाना नहीं चाहिए। बल्कि धैर्य के साथ सोच समझकर उनके प्रश्नों के उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट करना चाहिए।

6. विनोदप्रिय -

विनोद प्रिय का तात्पर्य हंसी-मजाक करने वाले व्यक्ति से होता है।यदि कोई शिक्षक अपना चेहरा गुस्से से लाल रखता है तो विद्यार्थी उस अध्यापक से अप्रसन्न रहते हैं। उससे प्रश्न पूछना वह बात करना पसंद नहीं करते हैं अतः अध्यापक को विद्यार्थियों से प्रेम पूर्व मधुर संबंध बनाने एवं कक्षा शिक्षण में रस और रुचि उत्पन्न करने के लिए विनोद प्रिय होना आवश्यक है।

www.ignited.in

7. उत्साह -

प्रभावशाली अध्यापक उत्साह ही होता है जो भी कार्य उसे दिया जाता है वह पूर्ण उत्साह के साथ उसे करता है इससे छात्रों में भी रुचि उत्पन्न होती है और वह भी अध्यापक का पूर्ण उत्साह के साथ सहयोग करते हैं जिससे कार्य मैं पूर्ण सफलता मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

8. आत्म-सम्मान -

जिस शिक्षक में आत्म सम्मान की भावना नहीं होती है। वे अध्यापक कहलाने के योग्य नहीं है। एक अच्छा और प्रभावशाली अध्यापक वह है जो विद्यार्थियों,प्रधानाध्यापक तथा अन्य के सामने इसी गलत बात के लिए नहीं झुकता है। किसी प्रकार का अन्याय सह नहीं करता है,गलत बात का समझोता नहीं करता है। जो अध्यापक अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति सचेत रहता है वही अपने आत्मसम्मान की रक्षा कर पाता है।

4. संबंध स्थापित करने का गुण-

एक अच्छा अध्यापक वह है जो हमें लोगों के साथ अच्छा संबंध रखता है और उन्हें बनाए रखता है एक अच्छे शिक्षक का निम्न लिखित व्यक्तियों से अच्छे संबंध होने चाहिए-

1. विद्यार्थियों के साथ संबंध-

अध्यापक का कार्य सिर्फ़ इतना ही नहीं है कि वह कक्षा में जाकर अपना पाठ पढ़ा दे।उसे यह भी देखना चाहिए कि छात्रों पर उसका कितना प्रभाव पड़ता है। वह इस बात को तब ही देख सकता है जब उसका विद्यार्थियों के साथ मधुर संबंध स्थापित हो। इसके लिए उसे प्रत्येक छात्र की और व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना चाहिए। उनकी समस्याओं का उचित समाधान करना चाहिए उनके साथ मित्रता करें।

2. साथी अध्यापकों के साथ संबंध-

अध्यापक को अपने साथी अध्यापकों के साथ मैं भी मधुर संबंध बनाने चाहिए। अच्छा शिक्षक वही है जो अपने साथी अध्यापक के साथ प्रेम और सहयोग का व्यवहार करें।उनके विचारों का आदर करे,उनकी नींद न करें।

3. प्रधानाध्यापक के साथ संबंध-

एक अच्छा टीचर वही है जो प्रधानाध्यापक की साथ सहयोग पूर्ण व्यवहार करता है।विद्यालय में चलने वाली विभिन्न क्रियाओं को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में अपना योगदान करता है।

4. अभिभावको के साथ संबंध-

एक अच्छा टीचर वह है जो छात्रों के साथ-साथ उनके माता-पिता से भी मधुर संबंध बनाता है। इसके लिए उसके विद्यार्थियों को माता-पिता को समय-समय पर बालक की प्रगति से परिचित कराते रहना चाहिए। बल्कि समस्याओं के समाधान के लिए विचार विमर्श करना चाहिए, अध्यापक को शिक्षक अभिभावक संघ बनाने में अधिकाधिक रुचि लेनी चाहिए।

5. समाज के साथ संबंध-

जिस समाज मे विद्यालय स्थित है। अध्यापकों को चाहिए कि वह उस समाज से भी अच्छे संबंध बनाएं इससे समाज के व्यक्ति विद्यालय की उन्नति में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।समुदाय के साथ संबंध बनाने की दृष्टि से टीचर विद्यार्थियों का सहयोग ले सकता है।

एक श्रेष्ठ वह अच्छे शिक्षक मैं शिक्षक के गुण होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उस में उपयुक्त सभी गुणों का होना आवश्यक है। जिस शिक्षक में उपयुक्त सभी गुण होंगे तो कहा जा सकता है कि वह अध्यापक कुशल और प्रभावशाली है।

अध्यापक केवल व्यक्ति का मार्गदर्शन ही नहीं करता बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के भाग्य का निर्माण करता है।अतः अध्यापकों को समाज के प्रति अपने विशिष्ट कर्तव्य को पहचानना

अध्यापक की कुशलता का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर प्रभाव

विद्यालय एक उपवन है: विद्यालय भी एक उपवन हैं जहां बच्चे उसके फूल हैं। उन फूलों को हम कैसी शिक्षा से पोषण करते हैं यही उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। जब हम बच्चे का सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो वह केवल किताबी ज्ञान में ही बौद्धिक रूप से सफल नहीं बना रहे हैं बल्कि व्यक्तित्व और विचारों से भी उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। शिक्षकों को बच्चों के समक्ष उदाहरण बनना होगा। बच्चे माता पिता और साथियों की अपेक्षा शिक्षकों के विचार और व्यवहार को जल्दी अनुसरण करते हैं। जब जब अभिभावक यह कहता रहेगा कि बच्चों के लिए उनके पास समय नहीं है तब तब बच्चों के प्रति हम अपनी जिम्मेदारी से दूर भाग रहे हैं। ऐसे में बच्चों को उनके दायित्व के प्रति केवल पढ़ाने मात्र से काम नहीं चलेगा। ऐसे बच्चे किशोर अवस्था तथा युवा अवस्था तक पहुंचते पहुंचते वे अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारण नहीं कर पाते जिस कारण उन्हें अपना जीवन नीरस लगने लगता है।

www.ignited.in

ऐसे में हमें बच्चों में पहले मेरा जीवन का अहसास कराना होगा इसके बाद ही वे अपना दायित्व समझ सकेंगे।

विद्यार्थियों की जिम्मेदारी: बच्चों को अपने जीवन के उद्देश्यों के प्रति जागरूक करना चाहिए। शिक्षण संस्थानों में क्लास मोनिटर बनाने के साथ उन्हें जो जिम्मेदारियां सौंपी जाती है उसका कारण उन्हें जिम्मेदारी बोध कराना है। यही कारण है कि विभिन्न सदनों के माध्यम से बच्चों को कई प्रभार सौंपे जाते हैं। हम सभी शिक्षकों का कर्तव्य बनता है कि समाज व विद्यालय के हर बच्चे को सुसंस्कृत एवं संस्कारी बनाने का प्रयास करें जिससे वह देश व समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बन सके। अनुशासन प्रेम एवं वात्सल्य के साथ दी गई शिक्षा ही विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बना सकती है।

लगातार करते रहें प्रेरित: बच्चों को शुरू से ही उनकी जिम्मेदारियों के प्रति प्रेरित करना चाहिए। इसकी शुरूआत घर से की जानी चाहिए। घर के छोटी छोटी जिम्मेदारियां सौंपनी चाहिए जैसे पढ़ाई से फुर्सत के दौरान छोटे मोटे सामान लाने के लिए बाजार जाने, घर में मेहमान आते हैं तो जलपान आदि परोसने, माता पिता के साथ बागवानी में हाथ बंटाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे बड़े होने पर वे अपनी जिम्मेदारी समझ सकेंगे। इससे उनमें घर व्यवहार की समझ विकसित होगी। इस दौरान गलती होने पर उन्हें डांटने के बजाय समझाते हुए प्रेरित करना चाहिए। कई बार अभिभावक बच्चों को नालायक या बिल्कुल ही नाकारा मानने लगते हैं। इससे बच्चों के मानस पटल पर गलत प्रभाव पड़ता है। हमें इससे बचना चाहिए। बच्चे गलती करें तो भी उनके काम की तारीफ करते हुए उनकी खामियों को बताना चाहिए ताकि वे अगली बार उन गलतियों को नहीं दोहराएं। बच्चों को अपना जीवन जीने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हमारा दायित्व केवल उन्हें मार्गदर्शन करने का होना चाहिए।

एक आदर्श जगत में, सभी छात्र हर वर्ष सीखने के अच्छे लाभ प्राप्त करेंगे, जिसके लिए उन्हें शिक्षा के नवीनतम सिद्धांतों के बारे में जानने वाले उन शिक्षकों से मदद मिलेगी जो इन सिद्धांतों को हर छात्र की अलग जरूरतों पर लागू करने के तरीकों से अवगत होंगे। शिक्षक यह काम विद्यालय द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों से संपन्न कर सकेंगे और वह भी तब जबकि उनके जीवन में अन्यत्र चाहे जो घट रहा होगा।

तथापि, हम एक आदर्श जगत में नहीं रहते हैं। शिक्षक भी मनुष्य होते हैं जो कभी-कभी **अपना कार्य उत्कृष्टता से नहीं दर्शा पाते**, यदि यह बात उन्हें पता हो, तो सुधार करने के लिए उन्हें शायद जरा सी ही सहायता की जरूरत पड़ेगी – लेकिन समस्या तब होती है जब शिक्षक को पता नहीं चलता कि वे बेहतर कर सकते हैं और छात्रों की सीखने की प्रक्रिया **शिथिल हो रही** है। यह एक संवेदनशील मुद्दा है जिसे सावधानी से संभालने की जरूरत है, लेकिन यह अच्छे विद्यालय नेता की भूमिका और दायित्व का हिस्सा है।

इस इकाई में आप सीखेंगे कि शिक्षक के काम के बारे में प्रमाण कैसे एकत्र किया जाता है और नियोजन से समर्थित विकास गतिविधियों का उपयोग करते हुए उसे सुधारने की कुछ अवधारणाओं का अन्वेषण करेंगे। आपके शिक्षक छात्रों की उपलब्धि के सबसे बड़े निर्धारक हैं और इसीलिए शिक्षक के काम को प्रोत्साहित करने में आपका प्रभाव छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और नतीजों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करेगा। एक विद्यालय नेता के रूप में आप शिक्षकों को अपने कार्य-प्रदर्शन को बेहतर करने में सहायता देकर उन्हें अधिक प्रभावी होने में सक्षम कर सकते हैं।

आपके शिक्षक में स्पष्ट शक्तियाँ हो सकती हैं लेकिन ऐसे क्षेत्र भी हो सकते हैं जहाँ वे सुधार कर सकते हैं। शिक्षकों के अच्छे कार्य-प्रदर्शन को पहचानना और अभिस्वीकृत करना महत्वपूर्ण होता है – इस बात को विशिष्ट रूप से संबोधित करने के लिए इस इकाई में आगे चलकर आप एक गतिविधि करेंगे। तथापि, सबसे पहले हमें कार्य-प्रदर्शन में कमी से निपटने पर ध्यान देना है। यह वह क्षेत्र है जिस पर शिक्षक उन कौशलों, ज्ञान और और व्यवहारों के सभी प्रकारों का उपयोग नहीं करते हैं जो एक उत्कृष्ट शिक्षक होने से संबद्ध होते हैं।

निष्कर्ष

यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि शिक्षक का खराब कार्य-प्रदर्शन आवश्यक रूप से इस बात से संबंधित नहीं होता कि शिक्षक अपने अध्यापन को या अपनी कक्षा को अन्य लोगों से अलग ढंग से संयोजित करता है या नहीं। अधिकतर इसका कारण यह होता है कि अध्यापन के परिणामस्वरूप उनके छात्र उतनी प्रगति नहीं करते हैं जिसकी उनसे उस समय सामान्य तौर पर अपेक्षा की जाती है। ऐसा भी हो सकता है कि सक्षम छात्र या मिसाल के तौर पर, किसी विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्र अच्छा काम करते हैं, जबकि अन्य नहीं।

यदि आप कक्षाओं में जाकर या शिक्षकों से बातचीत करके छात्रों की सीखने की प्रक्रिया पर नियमित रूप से डेटा एकत्र नहीं करते हैं, तो हो सकता है कि छात्रों की शिक्षा के बुरी तरह से हानिग्रस्त होने से पहले आपको कार्य-प्रदर्शन में इस कमी का पता न चले। इस वजह से, नियमित निगरानी करना आवश्यक होता है और उसे आपके रोजमर्रा के काम का हिस्सा

www.ignited.in

होना चाहिए। निगरानी करके आप अच्छे कार्य-प्रदर्शन की पहचान और अच्छा काम कर रहे शिक्षकों को मान्यता भी प्रदान कर सकेंगे।

आप कार्य-प्रदर्शन का प्रमाण कैसे एकत्र कर सकते हैं? यह बहुत महत्वपूर्ण है कि प्रमाण के आधार पर कार्यवाही की जाये न कि कहानियों या अनुमानों के आधार पर। तथापि, आम तौर पर कोई मुद्दा अन्य शिक्षकों और उनके कार्य की तुलना में उठाया जाता है, इसलिए एक से अधिक शिक्षकों या कक्षा के बारे में प्रमाण एकत्र करना अक्सर जरूरी होता है।

सन्दर्भ

1. डी, कोर. (2016). जम्मू डीविजन के विद्यार्थियों के व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू.

2. डगलस, डी. रेडडी. (2013). शैक्षिक एवं विद्यालयी संरचना का अध्ययन. शिक्षक -महाविद्यालय अभिलेख 106 (20) अक्टूबर 2004 पेज 1989-2014.

3. डी, कॉक. (2014). माध्यमिक शिक्षा में नवीन अधिनगम और अधिगम वातावरणों का अध्ययन, रिव्यु ऑफ़ एज्युकेशन रिसर्च 74(2) सित. 2004 पेज 141-170.

4. डेविस, (2015). अध्यापकों के चयन में केन्द्रीय स्थिति का निर्णय और विद्यालयी अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, केलीफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, फ्रेस्नो.

5. दास, एन. (2014). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अकादमिक एवं सामाजिक स्तर का अध्ययन. उत्कल विश्वविद्यालय, भुनेश्वर.

6. दास, एटिना. (2015). माध्यमिक विद्यालयी वातावरण में विद्यार्थियों का मत, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, रॉवन विश्वविद्यालय, रॉवन।

7. दीप्ति भारद्वाज (2017) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर विद्यालयी वातावरण, दूरदर्शन कार्यक्रम एवं पारिवारिक संस्कारों के प्रभाव का अध्ययन, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, मान्य विश्वविद्यालया, सरदारशहर प्रकाशित छवि नेशनल जर्नल ऑफ़ हायर एज्युकेशन, वर्ष - एक, निर्गमन-चार, जुलाई-सितम्बर 2013, पेज-12-16

8. गुड, बार. स्केट्स. (2014). मेथडोलाजी ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च न्यूयार्कः सेन्चुरी कम्पनी. न्यूयार्क.

9. गाँधी, के.ए. (2015). संगठनात्मक विरोध और विद्यालयों के परिणामों पर प्रबंधन व्यवस्था का प्रभाव, शिक्षा में प्रयोग वोल्यूमगग111(4) 67-74.

10. घालप. (2016). दादर और नागर हवेली संघीय क्षेत्रों में विद्यालयी बच्चों के लिए छात्रावास सुविधाओं का मूल्यांकन शोध अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

11. एच, उर्मिला. (2011). गुजरात राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में दृश्य-श्रव्य सामग्री का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, जामनगर.

12. हींगड, सुरेखा. (2016). माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

13. ज्ञानी, टी.सी. (2012). विद्यार्थियों और विश्वविद्यालयी (विद्या संबंधी) उपलब्धियों पर कक्षा कक्ष वातावरण (जलवायु) अध्यापकों के नायकत्व व्यवहार और आशाओं का प्रभाव इण्डियन एज्यूकेशनल रिव्यू, वोल्यूम 34 (2) 99-104.

Corresponding Author

Dr. Subhader Pal*

Lecturer, Education Department in Haryana

www.ignited.in